मूल असमीया पाठ	हिन्दी अनुवाद
तेवे जन्मिबंत राम चारि रूप धरि। बले बीर्य्ये धैर्य्यधिक देवतात करि॥ चारि भाइ महाबीर बिष्णु अंशे जात। दुष्ट बिनाशन हेतु जगते प्रख्यात ॥31	तब चार रूपों में आ राम जन्म लेंगे। शक्ति,वीर्य, धैर्य में देवों से श्रेष्ठ होंगे॥ चारों भाई वीर, विष्णु के अंश जिनमें। दुष्टों के विनाश हेतु ख्याति जगत में॥31
अस्त्रे शस्त्रे शास्त्रे सर्ब्बगुणे अनुपाम। गुह चंडालक मित्र करिब श्रीराम॥ मारीच सुबाहु दुइ राक्षस दुर्ज्जन। बिश्वामित्र ऋषिर यज्ञक करे छन॥32	अस्त्र,शस्त्र,शास्त्र सर्वगुण अनुपम। गुह चांडाल से मित्रता करेंगे राम॥ मारीच, सुबाहु दोनों राक्षस दुर्जन। ऋषि विश्वामित्र का यज्ञ करते छन्न॥32
याइबा बिश्वामित्र दशरथर गृहक। यज्ञ राखिबाक प्रति खुजिबा रामक॥ शुनि नृपतिर मुखे हरिष बचन। करिबंत भक्तिभावे ऋषिक अर्च्चन॥33	विश्वामित्र दशरथ के घर जायेंगे। यज्ञ की रक्षा के लिए राम को मांगेंगे॥ सुनकर राजा के हर्षित हैं वचन। भक्ति से ऋषि का राजा करेंगे अर्चन॥33
रामक नापाया ऋषि करिबंत क्रोध। बशिष्ठे करिब दशरथक प्रबोध॥ दिबा राम लक्ष्मणक बशिष्ठ बचने। लैया दुयो भाइक ऋषि याइबा रंगमने॥34	राम को न पाकर ऋषि करेंगे क्रोध। वशिष्ठ दशरथ को करेंगे प्रबोध॥ राम-लक्ष्मण को देंगे ऋषि वचन से। दोनों को ले चलेंगे ऋषि हर्ष मन से॥34
चलिबंत दुयो बिश्वामित्रर संगत। राक्षसर कथा मुनि कहिबा रामत॥ प्रथमते रामे बधिबंत ताड़काक। श्रीरामर प्रशंसा करिब देवजाक॥35	दोनों भाई विश्वामित्र के साथ चलेंगे। राक्षस की कथा ऋषि राम से कहेंगे॥ पहले राम ताड़का का बध करेंगे। श्रीराम की प्रशंसा देवगण करेंगे॥35
रामर बिक्रमे बर हरिषक पाइब। यत अस्त्र शस्त्र मुनि दोभाइक शिखाइब॥ नाना अस्त्र शस्त्र जानि हैब रंगमन। ऋषि समे दुयो प्रवेशिब तपोबन॥36	राम के विक्रम से बड़े हर्षित होंगे। अस्त्र-शस्त्र का ज्ञान ऋषि दोनों को देंगे॥ अस्त्र-शस्त्र जान आनंदित होंगे मन। ऋषि संग प्रवेश करेंगे तपोवन॥36
थाकिब दिनेक रामे राक्षसक ध्याने। यज्ञ नष्ट राक्षसे करिब बिद्यमाने॥	दिन में राम राक्षसों का करेंगे ध्यान। यज्ञ नष्ट करने राक्षस विद्यमान॥

मारीचक रामे उरुवाइब एक शरे।	मारीच उड़ेगा राम के एक बाण से।
सुबाहुक ससैन्ये डाकिबा यमघरे॥37	सुबाहु को बुला भेजेगा यमघर से॥37
देखि बिश्वामित्र आदि यत मुनिगण।	देखकर विश्वामित्र आदि मुनिगण।
रामक बुलिबे सबे प्रशंसा बचन॥	राम से बोलेंगे सब प्रशंसा वचन॥
पाछे ऋषिसवे देवमंत्र उच्चारिया।	महर्षि वेदमंत्र उच्चारण करेंगे।
करिबंत यज्ञ सांग पूर्णाहुति दिया॥38	यज्ञ सम्पन्न करके पूर्णाहुति देंगे॥38
आत अनंतरे कथा शुना महामति।	उसके बाद की कथा सुनो महामति।
मिथिला नगरे हैब जनक नृपति॥	मिथिलापुरी में होंगे जनक नृपति॥
ताने जीउ हैबा सीता लक्ष्मी समसर।	उनके प्राण होंगी लक्ष्मी समान सीता।
धर्म्म यज्ञ पातिबा सीतार सयंबर॥39	धर्म यज्ञ स्वयंवर करेंगे सीता का॥39
दूत पठाइ आनिबंत राजासकलक।	दूत भेजकर बुलायेंगे राजाओं को।
संगे लैया बिश्वामित्र राम लक्ष्मणक॥	ले जायेंगे विश्वामित्र राम-लक्ष्मण को॥
परम हरिषे ऋषि याहंते पथत।	अति हर्षित ऋषि पथ पर चलेंगे।
प्रवेशिबे याइ गौतमर आश्रमत॥40	गौतम के आश्रम में प्रवेश करेंगे॥40